

DPN 6600

स्तोत्र संग्रह STOTRA SANGRAHA

Title :

Run. No. 7325

Cat. No.

Micro. No.

Subject स्तोत्र Hymns.

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 15.7 x 8

Folios 13

Lines (in a page) 5

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place N huchhe Sundar

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Tuladhara

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

सूची - दशवत्सव, वन्दे श्री, मध्यगत, सिद्धिमुनि, सूर्यस्तव,

वृत्त ॥ ६ ॥ रुक्मिणी
रुक्मिणीलियुक्तं संन्यासि
मिरिचिभुक्तं न्यासं नमो
नमो नमो नमो नमो नमो
नमो नमो नमो नमो नमो
नमो नमो नमो नमो नमो

नं सा ॥ दसवन ॥ १० ॥ हिमसिद्धि मूदा हामधया
नान्नां झा दधकनि नरु जां ग्व नां गुत्रासनि हे ना व
न रुरुसहि ना सात्रा अकिथ न न ॥ दसवन ॥ ११ ॥
गजमुखदसनिकं सव था विन कं ना ज्विष्ठानमदवा
त्रिभुयक्षवि न नं द न न य नि लियं शु ना वा न नि या

नमस्तु ॥ दसवन ॥ १२ ॥ अरुसिद्धि शुभनि ना जू ऊ
सानि क ना शा न अनवि न वयत्मा वम था का यं रं ना
नि नय न न न था सु सायि शु ना कुमा ना ॥ दसवन न
॥ १३ ॥ असनवसन हि ना नि लु जा ग्व न रुरु ना व

हृदिविधविध्या ताया नवध नद हृ उरय गतिमिदि
ना नयि भा नायि सु ता ॥ दसवन ॥ १४ ॥ अथ यो
हि हृम हृ भा वसा वि द्यानां द्या क न क न हृ वि सि न्या
या स वा नि क अं भा यि अ नि ज य न स तां अ भा दि ता कु यि
स ता ॥ दसवन ॥ १५ ॥ अथ व न न क य न उ कु द ता

न जि द्या दि हि वि ज न न्या वा ता क या ना न था नयि अ
थि अ न स ता क्ति वि सां न यि सु ता ॥ दसवन ॥
॥ १६ ॥ अथ न नि धि म न्या भा हृ ना ना हृ ना शी म
नि क यि न तां द्या ल सी तां मू धा वि ता स म स य रु न दि ना
वा नि सां न यि सु ता ॥ दसवन ॥ १७ ॥ अथ न नि द

निविनायनं ॥ वृद्धमवसंघवयुनमामिदिनादिन्य
 तुस्मानाकयुनमाहामनिअनसधमयन्यदयानिध
 यरुननागधयजय ॥ सांनितयानिसरुदयन्यससुपा
 दिनंश्चनमयानन्यरुलकाकिनयनरुधतुसुदुषा
 दसवनानअभाधनयमानिका ॥ जूनिआधशसंम्यक

संवृद्धरुजालकस्यदसवनासुवनासुनंसमाय ॥ ३३
 ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥
 रुनमावधाय ॥ यंदआवजसलरुमनयनगुनसव
 वृद्धरुवतंनानालयनचनानिमिनरुयरुलनिमि
 लमात्रसासुधमाधनमनिनादिनगुनगुरुकुल

॥ ३३ ॥

मंगलं वंदे जगत्पुत्रं ॥ सदा नंदयक नृपयुगमसुखमय
 दहि नाम कुरु ॥ ॐ ॥ जल्लान काद निमिना वडस ताध
 तुभा रंध का नयि मिना ल ग य ड सी ल्लान नृप का सय
 नियुजित विद्य ध्यानं ॥ ॐ ॥ वज्र सल तुमि से न सि न मान
 मामि ॥ ज सी शु ना शु ना स न न न न वि द्या ॥ लं या नि

नारमलि नारम ना सि नाम नि त्वं सि धि सा धन यु
 शमा हानि दानं ॥ ॐ ॥ ना क ना थ य ल न स न नं यु का
 सी ॥ वृ धं न ना क ना थ भा न व ल न मि नं या दि सं सा दि नं
 दि नं नं वि द्य जं स क न नु न धा दि ॥ ध ल म ना क ज य कि नं
 जि सा भा र ध का ना ॥ क नि क य क म ना का म ना ल य जं

नं ॥ पुषदसा के सि रुद नमि न सि न सा भव का न न मा
मि ॥ हि का ना सा वो ना थ क न ना थं सम या स मि ॥ जू मा
य या स मि ना ना ना क ना थं न मा मि ॥ ना क सि न सा नं जू
म ध सा ग नं जू मि ना वा कि नं वा दि ध सा मि य म सा त्रि
मा म कि ना च नि य दू म न ना ना न म सु स व द्वा ना जि नं

धनुष न त क ॥ स व द्वा न य र्थ न ॥ धर्म धनु न मा
मि रुं ॥ न म ला ना तु न वि न तु ला ना रु य ना स नं तु न
स वा तु न का नं ला हा का नं न मा मि रुं ॥ ५५५ ॥
न मा व ध य ॥ म ध ग न वि रु य आ र्थ ना य न जि न अ न
हि रु मा स ना थ न अ न व रु ॥ न म सु न म सु य य जि न

पुषद

यथा के॥ निभाय नानय नमिन्द न न स्व ज्ञानि॥ न सान द
॥ ४ ॥ संसान साल वचन सय सो ना दकान न जय
सना द्विय कि न नाना॥ वा क्कान न न धय वा जन सिधियं
न॥ न स न द ॥ ५ ॥ य न य जय नि यं नि न नां वाम
नादि॥ य सां शुवा ज्ञु न व ड न य डि न नि नि न्य य नाम

ज

साकं मुनि नृणां गता ॥ स यं द र्व ह्य य का भि न ॥ ५२ ॥
नृत्ति य क गं त्य द नृत्ति य ना भ य द्वा गि त्रि न न ह्य न
२ य ज कू ल क ल म हि ह यिः य य कू गि त्रि वि सृ तं
३ ॥ वि षे त वि सि ष्णु म हा य कू त वि म ल नि त
सु लो डि तं २ न त्रि नि कू णु न स ग थ क द्वा त दि षे

कू णु म स हि न ॥ ५३ ॥ स क न य ल मा न स ह न द
नृत्त ले म य दू ति ना जि तं २ द न म क स्य त वि वि
न ना र्ज स्य य ह य न नि वा सि तं ॥ ५४ ॥ य व न
व य कू त क रू ष ना स म वि सा ल आ च न गं द र्व
२ य नृ त मू त्र ति नि त वि न न क प्र द्वा त स र्ज

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ ॥ हृषीकेश प्रपद्ये मां शरण्यं यत्पादौ मया ॥
प्रणम्यैव तैस्तुभ्यं नमस्कृत्यैव तैस्तुभ्यं ॥

१ ॥ वन्द्यं कथयिष्यामि त्वं कुरु प्रहृषितं
प्रकथयिष्यामि त्वं कुरु प्रहृषितं ॥ २ ॥
॥ तस्मिन् नमो भगवते वासुदेवाय ॥
हृषीकेश प्रपद्ये मां शरण्यं यत्पादौ मया ॥
३ ॥ त्वं कुरु प्रहृषितं प्रकथयिष्यामि त्वं कुरु प्रहृषितं ॥

पत्रं य म्पत्रस्तु न ल सुयो पु न मा मिहं ॥
५ ॥ लं वृथं विजाय नं न व, वायु ना का म ह्य
व वा सुवे हं श्री जग न ना थ ल सुयो पु न मा मिहं
७ ॥ लं द व ना क कली य, कि लि का न न स क न
८ ॥ नं न नू उ य नं द व लं सुयो पु न मा मिहं ॥

सुषुप्तं मं नु ग्रा का लं जग ज म्प वि व जि ग ग
म, त्रिं ग म द्य लं सु यो पु न मा मिहं ॥ १ ॥
नि म्प ल नि वि का न य, नि वि का सु नि ग्रा म य
६ ज ग थ लं जग न कली ल सु यो पु न मा मिहं
सु यो ना स्तु न य थ नि हं, ग्र ह वि दारि

